श्री हनुमान जी की आरती

नमो अंजनी नन्दनं वायु-पुत्रं ।

सदा मंगलकर्म श्रीराम दूतम् ॥

महावीर वीरेश विकरालवेश्म ।

घनानन्द निर्द्वन्द हरता क्लेशम्॥

किए कार्य सुग्रीव के आप सारे ।

मिले राम से शोक संदेह टारे ॥

गए लांघ वारीश शंका न खाई ।

हता पुत्र लंकेश लंका जलाई ॥

सिया का सन्देशा प्रभु को सुनाया ।

हिए हर्ष श्री राम ने कण्ठ लाया ॥

गई मूर्छा राम भ्राता पे छाजे ।

संजीवनी जडी लाए मूर्छा निवाजे ॥

कहे भक्त मण्डल हरो दुःख स्वामी ।

नमो वायु-पुत्रं नमामि नमामि-२ ॥